श्रीकालभैरवाष्टकं

kAlabhairavAShTakaM

sanskritdocuments.org

June 17, 2018

kAlabhairavAShTakaM

श्रीकालभैरवाष्टकं

Sanskrit Document Information

Text title : kaalabhairavaaShTakaM

File name : kaalabhairava.itx

Category : aShTaka, shiva, shankarAchArya

Location : doc_shiva

Author : Shankaracharya

Transliterated by : Narayanaswami Pallasena at swami at math.mun.ca

Proofread by : Narayanaswami Pallasena, Sunder Hattangadi

Latest update : August 10, 2002, June 17, 2018

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

June 17, 2018

sanskritdocuments.org

श्रीकालभैरवाष्टकं

देवराजसेव्यमानपावनांघ्रिपङ्कजं
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम् । var बिन्दु
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगंबरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ १॥

भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परं
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम् ।
कालकालमंबुजाक्षमक्षशूलमक्षरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ २॥

शूलटंकपाशदण्डपाणिमादिकारणं
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम् ।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ३॥

भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं
भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम् । var स्थिरम्
विनिक्वणन्मनोज्ञहेमकिङ्किणीलसत्कटिं var निक्वणन्
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ४॥

धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं var नाशनं
कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम् ।
स्वर्णवर्णशेषपाशशोभितांगमण्डलं var केशपाश, निर्मलं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ५॥

रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरंजनम् ।
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रमोक्षदं var भूषणं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ६॥

अट्टहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसंततिं
दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम् ।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकाधरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ७॥

भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदायकं
काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम् । var काशिवासि
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ८॥

॥ फल श्रुति ॥

कालभैरवाष्टकं पठंति ये मनोहरं
ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम् ।
शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनं var लोभदैन्य
प्रयान्ति कालभैरवांघ्रिसन्निधिं नरा ध्रुवम् ॥

var ते प्रयान्ति कालभैरवांघ्रिसन्निधिं ध्रुवम् ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री कालभैरवाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

Encoded by Narayanaswami Pallasena at swami@math.mun.ca
Proofread by Narayanaswami Pallasena and Sunder Hattangadi sunderh@hotmail.com

kAlabhairavAShTakaM
pdf was typeset on June 17, 2018

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*